राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य

राहुल सांकृत्यायन
का
कथा साहित्य

[कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की पी एच० डी०
उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध]

लेखक
डॉ० प्रभाशंकर मिश्र
एम० ए० पी एच० डी०

प्रकाशक

अशोक प्रकाशन
नई सड़क, दिल्ली ६

प्रकाशक
अशोक प्रकाशन
नई सड़क दिल्ली।

प्रथम संस्करण १९६७
मूल्य १५.००

मुद्रक
जनता प्रेस
आगरा।

भूमिका

हिन्दी जगत मे महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व विशेष महत्व रखता है। वे अप्रतिहत श्रम शक्ति एव असाधारण प्रतिभा के प्रतीक हैं। उनकी मानव जीवन म आस्था है। मानव-जीवन को सुखमय समृद्ध तथा पूर्ण बनाने के हेतु वे सदव प्रयत्नशील रहे हैं। उनका जीवन प्रयोगवादी रहा है। उन्हें दूसरो द्वारा निर्दिष्ट माग पर चलकर सन्तोष नही हुआ। सत्यान्वेषण उनके जीवन का लक्ष्य रहा है। राजनीति, धम एव सामान्य जीवन से सम्बद्ध विभिन्न क्षत्रो म उन्होने अनेक प्रयोग किये हैं। काग्रेस कायकर्ता के रूप म उन्होने अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया था। द्वितीय सोवियत यात्रा (सन् १९३८ ई०) के उपरान्त वहा के साम्यवादी जीवन से प्रभावित हो वे साम्यवादी बने और अन्त तक साम्यवादी रहे। उनका विचार था कि साम्यवाद ही एक ऐसा माग है जिसका अनुसरण दीनो और श्रमिको को दु खमय जीवन से मुक्त करा सकता है। उन्होने किसी वाद का अन्धानुकरण नही किया। जब किसी वाद के खोखलेपन को लक्षित किया उन्होने एक नवीन स्वतन्त्र माग खोज निकाला। धम के क्षत्र म व वष्णव से आयसमाजी तदुपरान्त बौद्ध और अन्तत अनीश्वरवादी बने। उन्होने वज्ञानिक भौतिकवाद के माग को सच्चा मानकर स्वीकार किया। वे प्रत्येक मत की उपयोगिता को जीवन की कसौटी पर कसते थे। देश विदेश की यात्राओ ने उनकी विचारधारा को रूढिवादिता से मुक्त किया। यात्राओ ने राहुल जी की धम विषयक धारणाओ राजनीतिक विचारो और साहित्यिक मान्यताओ को प्रभावित किया था।

राहुल जी का जीवन, सरल एव आडम्बरमुक्त रहा है। अविरल कम उनके जीवन का परम मनोरथ रहा है। आलस्य एव प्रमाद से व दूर थ। उनकी रचनायें उनके असाधारण पुरुषाथ, दृढ मनोबल एव अनुशासित कायप्रणाली का परिणाम है।

राहुल जी की प्रतिभा सवतोमुखी थी। उन्होने हिन्दी सस्कृत एव तिब्बती भाषाओ मे रचनायें की। हिन्दी म उन्होने उपन्यास कहानी यात्रा जीवनी सस्मरण, देश दशन विज्ञान, इतिहास, राजनीति तथा दशन सम्बन्धी विषयो पर पर्याप्त मात्रा

में लिखा। साहित्य की जिस विधा में उन्हें रचनाओं का अभाव खटका, उसी पर उन्होंने कलम कर लिया। प्राचीन मान्यताओं से नवीन मान्यताओं का सामंजस्य स्थापित करने के लिए राहुल जी ने ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। मानव संस्कृति की अमूल्य निधि को सरल कहानियों के रूप में प्रस्तुत करके कहानी परम्परा को उन्होंने साहित्य की चरम सीमा तक पहुँचाया। वोल्गा से गंगा की कहानियों के रूप में मानव विकास की झांकी राहुल जी की हिन्दी साहित्य को अनुपम देन है। देश विदेश की यात्राओं तथा भारतीय राजनीति में व्यस्त रहने पर भी उन्होंने हिन्दी साहित्य को जिस कोटि और परिमाण में रचनायें दी हैं उन्हें देखकर विस्मित होना स्वाभाविक है।

राहुल जी की कला के छोर इतने विस्तीर्ण हैं कि एक साथ उस पर विचार करना कठिन है। साहित्यिक विधाओं एवं भावपक्ष की दृष्टि से राहुल जी की रचनाओं में अत्यधिक विविधता होने के कारण उन सबका एक साथ अध्ययन असाध्य है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में राहुल जी के रचनात्मक कथा साहित्य को आलोचना का विषय बनाया गया है। उनके कथा साहित्य में मानव जीवन के अनेक युग सिमट आये हैं। उन्होंने इतिहास के चौखटे में मानव की शाश्वत समस्याओं एवं भावनाओं को ऐसे अनुपम रूप में प्रस्तुत किया है कि वे अतीत की झांकी एवं वर्तमान की निधि हैं। उनके कथा साहित्य में एक दक्ष पर्यटक के जीवन अनुभव तथा कुशल इतिहासकार की आस्था अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम द्वारा भारत के प्राचीन इतिहास में साम्यवादी विचारधारा तथा गणतन्त्र शासन प्रणाली के तत्व खोजने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विवेच्य विषय राहुल जी के कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन है। इस विषय पर विधिवत आलोचनात्मक अध्ययन का अब तक नितान्त अभाव रहा है। गत वर्षों में इस विषय से सम्बद्ध टीका टिप्पणियाँ आलोचना ग्रन्थों तथा पत्र पत्रिकाओं में देखने में आई हैं किन्तु उनमें विश्लेषणात्मक अध्ययन की अपेक्षा भावावेग का पुट अधिक है। इस दृष्टि से कथा तत्वों के आधार पर राहुल जी के उपन्यासों एवं कहानियों का प्रस्तुत विश्लेषण तथा उनकी उपन्यास एवं कहानी कला के विकास का निर्देश कार्य लेखक की ओर से मौलिक प्रयास है।

लेखक ने विभिन्न मान्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित कथा साहित्य सम्बन्धी सिद्धान्तों एवं तत्वों की कसौटी पर राहुल जी के उपन्यासों एवं कहानियों को परखने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम तीन अध्यायों में, क्रमश राहुल जी के व्यक्तित्व उनकी रचनाओं तथा कथा

साहित्य के स्वरूप का निरूपण करते हुए उनके उपन्यासों एवं कहानियों का वर्गीकरण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राहुल जी के उपन्यासों तथा पंचम अध्याय में उनकी कहानियों का—कथावस्तु, पात्र चरित्र चित्रण कथोपकथन तथा जीवन दर्शन मुख्य कथा तत्वों की दृष्टि में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। राहुल जी की कथा-कृतियों में, कथोपकथन भाषा एवं लेखन शैली के तत्व प्राय समान हैं। पुनरावृत्ति तथा विस्तार भय के कारण इन कथा तत्वों की दृष्टि से राहुल जी के उपन्यासों एवं कहानियों का विवेचन एक साथ षष्ठ अध्याय में किया गया है। अध्यायों के अन्त में विवेचन के फलस्वरूप उपलब्ध निष्कर्षों का उल्लेख किया गया है। राहुल जी के मौलिक चिन्तन तथा उनकी रचनात्मक कला के विकास का परिचय उनकी मौलिक कथा कृतियों से ही प्राप्त हो सकता था अतः उनकी मौलिक कथा कृतियों को ही प्रस्तुत शोध कार्य का विषय बनाया गया है अनूदित को नहीं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय, 'महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व'—में राहुल जी के व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि में सबद्ध परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का चिन्तन है। अध्याय के आरम्भ में, उनके बाल्य तथा पारिवारिक जीवन का अंकन है। तत्पश्चात उनके घुमक्कड़ी जीवन तथा उनकी धार्मिक एवं राजनीतिक गतिविधियों का चित्रण है। अध्याय के अन्त में राहुल जी के साहित्य को अनुप्राणित करने वाले तत्वों का विश्लेषण किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'राहुल जी की रचनाएं तथा साहित्यिक कृतियां' में राहुल जी के रचना कार्य की विशालता का परिचय कराते हुए उनकी रचनाओं से सम्बद्ध, उपलब्ध सूचियों के तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त उनकी हिन्दी साहित्य की परिधि में आने वाली, कृतियों की निर्णीत सूची प्रस्तुत की गई है।

तृतीय अध्याय, 'कथा साहित्य तथा राहुल जी द्वारा रचित उपन्यास एवं कहानियां' में कथा साहित्य तथा साहित्य के पारस्परिक सम्बन्ध का उल्लेख करते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित उपन्यास एवं कहानी सम्बन्धी परिभाषाओं के आधारभूत तत्वों की छान बीन कर उपन्यास एवं कहानी के मौलिक स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास है। उस स्वरूप की कसौटी पर उपन्यास एवं कहानी विधा के अन्तर्गत आने वाली राहुल जी की कृतियों को परख कर, उनका विभिन्न तत्वों की दृष्टि से वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय, राहुल जी के उपन्यासों का अध्ययन—कथावस्तु चरित्र चित्रण वातावरण एवं जीवन दर्शन के तत्वों की दृष्टि से—के चार उपविभाग हैं। क विभाग में राहुल जी के उपन्यासों की मुख्य कथा तथा गौण सूत्रों का

विश्लेषणात्मक दृष्टि से सार सचय कर उनका आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। ऐतिहासिक उपन्यासो से सम्बद्ध ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक सामग्री का सचय किया गया है तथा उसके विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं। इस विभाग के अन्त मे राहुल जी के उपन्यासो की कथा शिल्प कला का विवेचन है। ख विभाग म पात्र और चरित्र चित्रण की दृष्टि से राहुल जी के उपन्यासो का विश्लेषण करते हुए नायक पात्रो आक्रमणकारी नायक पात्रों, अन्य पुरुष पात्रो तथा मुख्य नारी पात्रो के चरित्र पर विचार किया गया है। विभाग के अन्त म राहुल जी के उपन्यासो की पात्र चित्रणकला सम्बन्धी निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं। ग विभाग म राहुल जी के उपन्यासो मे वातावरण-सृष्टि के अन्तर्गत उनके उपन्यासो के घटनास्थल तथा काल क्रम का विवेचन करते हुए उपन्यासो से सम्बद्ध राजनीतिक सामाजिक धार्मिक एव सास्कृतिक परिस्थितिया तथा प्राकृतिक चित्रण का स्पष्टीकरण किया गया है। घ विभाग म राहुल जी के उपन्यासो म जीवन-दर्शन के अन्तर्गत उपन्यासो म व्यक्त उनकी जीवन सम्बन्धी धारणाओ का विवेचन करते हुए, उनके विभिन्न उपन्यासो के उद्देश्य पर विचार किया गया है।

पचम अध्याय राहुल जी की कहानियो का अध्ययन—कथावस्तु चरित्र चित्रण वातावरण एव उद्देश्य के तत्वो की दृष्टि से—के चार उपविभागो म से क विभाग म राहुल जी की कहानियो के कथा सूत्रो का अकन तथा उनका विश्लेषण है। तत्पश्चात उनकी कहानियो की कथा शिल्प कला का उद्घाटन है। 'ख विभाग म चारित्रिक गुणो के आधार पर राहुल जी की कहानियो के वर्गीकरण के उपरान्त प्रतिनिधि पात्रो के चरित्र का विश्लेषण है। निष्कर्ष रूप म राहुल जी की कहानियो की पात्र चरित्र चित्रण कला का विवेचन है। ग विभाग म राहुल जी की कहानियो म वातावरण सृष्टि के अन्तर्गत उनकी कहानियो के घटनास्थल काल क्रम तथा कहानियों से सम्बद्ध राजनीतिक सामाजिक सास्कृतिक एव धार्मिक परिस्थितियो तथा प्रकृति चित्रण का विश्लेषण है। घ विभाग म कहानियो म व्यक्त राहुल जी के जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण तथा उनकी कहानियो के उद्देश्य का अकन है।

षष्ठ अध्याय राहुल जी के उपन्यासो तथा कहानियो का कथोपकथन भाषा एव लेखन शैली की दृष्टि से विश्लेषण के 'क ख ग तीन विभाग हैं। क विभाग मे राहुल जी की कथोपकथन कला पर विचार है। ख विभाग मे राहुल जी की भाषा के विविध रूपो की चर्चा है। ग विभाग म उपन्यासो एव कहानियो मे राहुल जी की लेखन शैली की प्रवत्तियों पर विचार किया गया है।

सप्तम अध्याय 'उपसहार—राहुल जी की कथा साहित्य' मे राहुल जी की उपन्यास एव कहानी कला पर विचार करते हुए, हिन्दी कथा-साहित्य म राहुल जी के स्थान तथा उनकी देन का उल्लेख है।

परिशिष्ट' म श्रीमती कमला साकृत्यायन से शोध काय के प्रसग मे किये गये पत्र व्यवहार से, उनके उल्लेखनीय पत्रो को उद्धृत किया गया है। इनसे राहुल जी के व्यक्तित्व एव उनकी रचनाओ के विषय मे विशेष प्रकाश उपलब्ध होता है।

इस नम्र निवेदन को समाप्त करने से पूव पूज्य गुरुजनो की कृपा का उल्लेख करना लेखक अपना परम पुनीत कर्तव्य समझता है। लेखक का यह परम सौभाग्य है कि हिन्दी जगत के प्रकाण्ड विद्वान एव मूर्धन्य लेखक डॉ० विनय मोहन जी शर्मा, आचाय एव अध्यक्ष हिन्दी विभाग तथा डीन, कला सकाय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का उस पर सदव वरद हस्त रहा है। प्रस्तुत शोध काय की परिपूणता आचाय जी के स्नेहपूर्ण अपरिमित आशीर्वाद का शुभ फल है। पूज्य आचाय जी के प्रेरणापूर्ण प्रोत्साहन के निमित्त लेखक सदव उनका ऋणी रहेगा। डा० पदमसिंह जी शर्मा, कमलेश, रीडर, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के बहुमूल्य सुझावो से, लेखक लाभान्वित होता रहा है। लेखक श्रद्धेय डाक्टर साहब के प्रति उनकी असीम कृपा दृष्टि के हेतु हृदय से आभार प्रकट करता है। राहुल जी के उपन्यासो की ऐतिहासिकता से सम्बद्ध विषयो में श्रद्धेय डा० बुद्धप्रकाश जी निदेशक प्राच्य विद्या सस्थान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की ओर से जो अमूल्य सुझाव प्राप्त हुए उनके लिये लेखक डाक्टर साहब के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। लेखक, डा० विद्याभूषण तनेजा प्रिंसिपल शिक्षण महाविद्यालय कुरुक्षेत्र की सद्भावनाओ एव उनकी ओर से प्राप्त, सतत प्रोत्साहन के लिये हृदय से कृतज्ञ है। शोध काय की अवधि म श्रीमती कमला साकृत्यायन की ओर से राहुल जी के व्यक्तित्व एव उनकी रचनाओ से सम्बद्ध विषयो म जो जानकारी पत्र व्यवहार द्वारा प्राप्त होती रहा है उसके लिये लेखक हृदय से उनका आभारी है। लेखक को अपने पूज्य पिता जी (प० हरिदत्त जी मिश्र शास्त्री) की ओर से शोध काय के समय जो प्रौढ एव बहुमूल्य सुझाव प्राप्त होते रहे हैं उनके लिये जितनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की जाय थोडी है। कृतज्ञता ज्ञापन के औपचारिक शब्दो द्वारा लेखक पूज्य पिता जी के शुभाशीर्वाद के महत्त्व को घटाना नही चाहता। लेखक निज जन्मदात्री मगलकामिनी एव स्नेहमयी जननी के वात्सल्यपूर्ण एव परम पुनीत शुभाशीर्वाद के निमित्त सदव ऋणी रहेगा।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध श्रद्धेय डा० शशिभूषण जी सिंहल, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुशल निर्देशन म सम्पन्न हुआ है। शोध प्रबन्ध

की रूप रेखा से लेकर शोध कार्य के पूर्ण होने तक श्रद्धेय डॉ० साहब की ओर से जो विस्तापूर्ण निर्देशन प्राप्त होता रहा है उससे उऋण होने में लेखक सर्वथा असमर्थ है। श्रद्धेय डाक्टर साहब ने, जिस तत्परता एवं स्नेह से, लेखक का पथ प्रदर्शन किया है, उसके लिये वह सदैव हृदय से कृतज्ञतापूर्ण आभार प्रकट करता रहेगा।

प्रसादान्निष्टं देवस्य विदुषां चानुकम्पया।
राहुलस्य महावीर्तें समीना पूर्णिमागता॥

लेखक

दिनांक १० ११ १९६२

विषय-सूची

———

प्रथम अध्याय

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व

बालक केदार

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का जीवन उस सहज सरिता का प्रवाह है जो सम विषम स्थलों की चिन्ता न कर स्वच्छन्द गति से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होती रहती है। कौन जानता था कि एक छोटे से ग्राम के साधारण परिवार में जन्म लेने वाला केदार एक दिन महापण्डित की उपाधि से देश विदेशों में विख्यात होगा।

राहुल सांकृत्यायन का बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डेय था। इनके पूर्वज सरयूपारीण ब्राह्मण थे। वे मचया ग्राम के रहने वाले थे जो गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में है। बाद में इनके पूर्वज आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) चले आये थे। चक्रपाणि नामक एक पूर्वज को उनके यजमान मेहनगर के राजा ने इक्यावन बीघा भूमि दान में दी थी। चक्रपाणि ने उस भूमि में अपने नाम पर (चक्रपाणिपुर) ग्राम बसाया जो आज भी वर्तमान है। परिवार बढ़ने से चक्रपाणि के वंशज कई समीपस्थ ग्रामों में फैल गये। चक्रपाणि की कुछ पीढ़ियों के अनन्तर इस परिवार के इच्छापाण्डे चकरपानपुर (चक्रपाणिपुर) से कनला ग्राम (जिला आजमगढ़) में आ बसे। उनके वंशज अब भी इस ग्राम में रह रहे हैं। इच्छापाण्डे की छठी पीढ़ी में केदारनाथ का जन्म हुआ।

केदारनाथ के पितामह का नाम जानकी पाण्डे और पिता का नाम गोवर्धन पाण्डे था। केदार के नाना का नाम रामशरण पाठक और माता का नाम श्रीमती कुलवन्ती था। कुलवन्ती अपने माता पिता की एक मात्र सन्तान थी। इसलिए विवाह हो जाने पर वे अधिकतर अपने पिता के गाँव पन्दहा में रहा करती थी। केदार का जन्म रविवार ९ अप्रैल सन् १८९३ ई० को ननिहाल पन्दहा (आजमगढ़) में हुआ था। पन्दहा और केदार के पितृग्राम कनला के बीच दस मील का अन्तर है। कनला ग्राम आजमगढ़ नगर से सोलह मील दक्षिण मुहम्मदाबाद तहसील में आजमगढ़ से तरवा थाना जाने वाली सड़क पर स्थित है। कनला ग्राम के दक्षिण में मागवती (मगई) नदी बहती है।

नाती केदार के जन्म से उनके नाना और नानी को अपार आनन्द हुआ। अपनी माँ से अलग रहने योग्य हो जाने पर केदार के नाना नानी ने उन्हें अपने पास

रख लिया। वे उनसे बहुत स्नेह करते थे। अपनी माँ के अनुकरण पर केदार अपनी नानी को माँ कहा करते थे। बचपन में केदार को खेल-कूद का बहुत चाव था। वह अपने साथियों के साथ हापट (देहाती हाकी) चिक्की डंडा, कबड्डी आदि खेल खेला करते थे।

बचपन में केदार के दुबले-पतले शरीर के कारण उनके नाना नानी उनके खानपान का विशेष ध्यान रखते थे। वे वैष्णव थे और मांस नहीं खाते थे पर अपने नाती के लिए मछली मांस का प्रबंध करने में वे कोई संकोच न करते थे। केदार को दाल से चिढ़ थी। वे दूध दही खांड या खीर तथा मछली मांस और तरकारियों से रोटी खाना पसन्द करते थे। केदार के बचपन की वेशभूषा वही थी जो भी अभी वहाँ के लोग पहनते थे—धोती कुरता। गाँव के और लड़कों की भाँति उनके लिए भी जूता पहनना आवश्यक था। सन १९०४ ई० में उनके पुराने भाव पाठशाला में विवाह में पहन ... ग्यारह वर्ष की आयु में केदार के लिए जूता खरीदा गया था।[1]

पढ़ना नहीं तो बढ़ना तो सीखेगा।—इस उद्देश्य को लेकर केदार को नवम्बर सन १८९८ ई० में रानी की सराय के प्राइमरी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया। नाना की धारणा थी कि हिंदी से उर्दू का महत्व अधिक है इसलिये केदार को उर्दू पढ़ाना आरम्भ कराया गया। हिन्दी पढ़ने वाले साथियों के सम्पर्क से हिंदी सीखने की ओर केदार का ध्यान गया। सन १९०० ई० में केदार ने दर्जा दो पास कर लिया। रानी की सराय के प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर लेने पर उनको फरवरी सन १९०६ ई० में निजामाबाद के मिडिल स्कूल भेजा गया। सन १९०८ ई० में उन्होंने इस स्कूल से उर्दू मिडिल भी पास कर लिया।

अनमेल विवाह

ग्यारह वर्ष की अबोध अवस्था में अर्थात सन १९०४ ई० में केदार को समाज की तत्कालीन कुप्रथाओं का शिकार होना पड़ा। उनका विवाह अहिरौला ग्राम (जिला आजमगढ) के एक धनी ब्राह्मण की सुंदर कन्या सन्तोषी से कर दिया गया।[2]

---

[1] मेरी जीवन यात्रा भाग १ पृ १४

[2] राहुल जी यौन सम्बन्धों और विवाह में स्वच्छन्दतावादी रहे हैं। (कृपया देखिये अध्याय ४) राहुल जी ने दूसरा विवाह मिस लोला नाम की रूसी महिला से सन १९३७ ई० में किया। (मेरी जीवन यात्रा राहुल भाग २ पृ ४५६) अब वह पत्नी अपने पुत्र इगोर राहुलोविच सांकृत्यायन सहित रूस में रह रही है। तीसरा विवाह राहुल जी ने श्रीमती कमला जी से सन १९५० ई० में किया। यह सम्बन्ध उन्होंने स्थायी रूप से निभाया। कमला जी अपनी दो संतानों सहित इस समय दार्जिलिंग में निवास कर रही हैं। (देखिये कमला जी का २५.६.६४ का पत्र परिशिष्ट)।

विवाह के समय केदार की आयु और रुचि की ओर ध्यान नही दिया गया। धोपी (केदार की पत्नी) अपने पति स पाँच वष बडी थीं। विवाह के बाद केदार साथी उन्हें चिढाने लग। कहने लगे कि तुम्हें बूढी स्त्री मिली है। ऐसी बातें वे मन को दुःख पहुचाती थी। इसीलिए वे अपनी ननिहाल स पितृग्राम कम ही जाते थे। आने पर वे पत्नी से न तो मिलत थे और न ही उससे बोलते थे। अपने विवाह की चर्चा करत हुये राहुल जी (बचपन के केदार) ने अपनी जीवनी लिखा है— उस वक्त ग्यारह वष की अवस्था में मेरे लिये यह तमाशा था। जब सारे जीवन पर विचारता हू तो मालूम होता है समाज के प्रति विद्रोह का अकुर करने मे इसने ही पहला काम किया।[1] केदार ने बचपन में जिसे तमाशा का था वह उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी।

केदार का उस समय का ज्ञान बहुत परिमित था तथापि वे अपनी सतक से इस विवाह को घर एव समाज द्वारा अपने प्रति किया हुआ अन्याय समझते ऐसे विवाह को वे न्याय विरुद्ध मानत थे और इस बन्धन को तोड डालने के लिए न रहे थे। इस प्रसग मे राहुल जी न लिखा है— यदि सयानो ने जिम्मवारी समझी और एक अबोध व्यक्ति को फन्दे मे फसा दिया तो यह आशा रखनी तक उचित है कि शिकार फन्दे को उसी तरह पर म डाले पडा रहेगा।[2] साकृत्यायन जहाँ अपन आपको ऐसे विवाह पाश स मुक्त करन के पक्ष म थ व उस परिणीता द्वारा स्वतन्त्र माग अपनाय जाने के पक्ष म भी थे। इस ओर सकेत हुए उन्होंन लिखा है— यदि वह समझती है कि उस पर अन्याय हुआ है समाज से बदला लनी वह अपना रास्ता लने के लिए स्वतन्त्र है।[3] पर प्रश्न है कि क्या ऐसे विचार प्रकट करने स राहुल जी अपनी प्रथम परिणीता के उत्तरदायित्व से मुक्त हो सकते हैं।

इस प्रश्न पर लोगो न बहुत चर्चा की है। कुछ लोगा ने राहुल जी द्वारा प्रथम पत्नी के प्रति किय गय इस व्यवहार को अन्याय समझा है। वे कहते हैं राहुल जी न अपनी इस पत्नी के जीवन को दुःखमय बनाकर बडी अधिक अन्याय किया है। राहुल जी को करुणा का अवतार बनाया जाता है। पर उक्त घटना को देख हमारी इस धारणा को बडा धक्का लगता है। बाद मे राहुल जी न अपने इस पर दुःख भी प्रकट किया। यहाँ पर इस सम्बन्ध में एक घटना का उल्लेख अनुचित न होगा। सन १९५८ ई० की बात है। राहुल जी ने सुना कि उनकी परिणीता बीमार होकर इलाज करवाने के लिए वाराणसी आई हुई हैं। वे मिलने गय। तब तक उनकी धर्मपत्नी अपने गाँव (आजमगढ) चली गई थी। उनके भतीजे उदयनारायण पाण्डेय थे। राहुल जी ने पाण्डेय जी से कहा—

मैं तुम्हारी चाची से मिलना चाहता था पर न उनसे न मिल सका। तथा कहना कि मैंने उनके साथ जो वादा किया वह करना था। मैं उनसे है। यदि महत्वाकांक्षा न करता तो अपने उद्देश्य की पूर्ति न कर पाता। कहते राहुल जी की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। और वृद्ध मन गये। जी ने अपने इस कार्य का कारण हृदयहीनता कहा अतिरिक्त प्रति कहा है। पर उनके इतना कहने से क्या क्षतिपूर्ति हो सकती है? उनकी पत्नी अपने गाँव में अब तक जीवित है और बुढ़ापे के कष्ट भोग रही है।

राहुल जी 'घुमक्कड़' क्यों बने ?

केदारनाथ (भविष्य के राहुल) के पिता की इच्छा थी कि वे शिक्षित होकर घर पर केदार का मन कहीं और ही था। उन्हें घर का बंधन अच्छा न व घूमना चाहते थे। उनका इस प्रवृत्ति के कई कारण थे। उनके नाना सेना में थे। उन्होंने दक्षिण भारत की यात्रा की थी और अपने सैनिक जीवन में उनको सामने वर्णन कारनामे किये थे। अब अपने अवकाश के विगत जीवन की कहानियाँ बड़े चाव से सुनाया करते थे। यात्रा प्रेम केदार में न कहानियों से ही अंकुरित हुआ था।

केदारनाथ के मन में यात्रा प्रेम जाग्रत करने में एक अन्य कारण भी था। उन्होंने अपनी पाठ्य पुस्तक (मौ. इस्माईल की उर्दू की चौथी किताब) नवाजिन्दा बाजिन्दा की कहानी सदराई का नतीजा पढ़ी। इस कहानी में लिखित एक शेर था

सैर कर दुनिया की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ।
जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ?॥

इस शेर के संदेश ने केदार के मन को यात्राओं के लिए प्रोत्साहन दिया।

परिस्थितियों ने केदार की इस प्रवृत्ति को उकसाया। अल्पावस्था में उनका प्रथम विवाह हो गया था। यह विवाह उनकी रुचि के विरुद्ध था। माता का भी देहान्त हो चुका था। अतः घर में उन्हें अब कोई आकर्षण नहीं केदार के नाना का अपने भतीजों के साथ जमीन सम्बन्धी झगड़ा बखेड़ा चल केदार का मन उन संकीर्ण झगड़ों के कारण और दुःखी रहने लगा। इस उमरपुर के बाबा परमहंस के पास जाने लगे। बाबा परमहंस भारत भ्रमण चुके थे। वह प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से कहा करते थे कि दुनिया देखो। केदार की ओर से अध्ययनरत थे ही उन्हें बाबा परमहंस की यह बात अच्छी लगी। सभी कारणों ने मिलकर केदार के घुमक्कड़ी जीवन का सूत्रपात किया।

आगे चलकर केदार ने राहुल सांकृत्यायन के रूप में स्वयं पूर्ण घुमक्कड़ बन जाने पर दूसरों को भी घुमक्कड़ी के लिए प्रोत्साहित किया और घुमक्कड़

---

[1] साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ जून १९६३ पृ. ३१
मेरी जीवन यात्रा भाग १ पृष्ठ

शन के लिए घुमक्कड़ शास्त्र तक लिख डाला। 'घुमक्कड़ शास्त्र' और राहुल के अन्य यात्रा-ग्रन्थों का अध्ययन करने से उन सूत्रों का ज्ञान होता है जो राहुल को घुमक्कड़ी के लिए प्रेरित करते रहे थे।

जीवन और जगत सम्बन्धी अनुभव प्राप्ति की परम लालसा राहुल जी की घुमक्कड़ी वृत्ति का मूलाधार रही है। उन्होंने अनुभव किया कि एक ही स्थान पर रहने से मनुष्य के अनुभव सीमित हो जाते हैं। भ्रमण में मनुष्य नित्य नवीन ज्ञान प्राप्त करता है जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण विकसित होता है। उसमें सुखदुःख समत्व की भावना जाग्रत होती है। भिन्न भिन्न विचारों और सम्प्रदायों के सम्पर्क में आने से विचार सहिष्णुता की भावना उत्पन्न होती है। फलस्वरूप राहुल जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी बदला। सम्प्रदायों की छोड़ मानवतावादी बने। विचारसहिष्णु बने।

विचार सहिष्णु बनने के साथ यात्रा अनुभवों द्वारा मनुष्य कष्ट-सहिष्णु भी बनता है। उसे दुर्गम स्थानों को पार करना पड़ता है अन्य पशुओं का भय बना रहता है। कभी तो सर्दी गर्मी भूख प्यास वर्षा आँधी के कारण कष्टों का पग पग पर कष्टों का सामना करना पड़ता है। यात्रा के कष्टों ने राहुल जी को कष्ट सहिष्णु बना दिया था। दुर्गम स्थानों को वे सरलता से पार कर सकते थे। स्नान न सुख-आराम की चिन्ता किये बिना वे अपने मार्ग पर बढ़ते रहते थे। यह उनकी कष्ट-सहिष्णुता का ही परिणाम था कि बाद के जीवन की कठिन यातनायें सहज सह्य बन गईं। यात्री कभी आलस्य का अनुभव नहीं करता यह बात राहुल जी के जीवन से पूर्णतया सिद्ध होती है। राहुल जी ने न कभी थकावट अनुभव की न आलस्य का ही प्रदर्शन किया। रात हो या दिन किसी का साथ हो या न हो, वे घुमक्कड़ी के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

घुमक्कड़ का मन सदा विभिन्न देशों के लोगों के रहन सहन उनकी भाषा उनके व्यवहार और उनके रीति रिवाजों की ओर आकर्षित होता रहा है। वहाँ की प्रकृति मन को रमाती है। ये सभी आकर्षण घुमक्कड़ को उसकी व्यक्तिगत चिन्ताओं से मुक्ति प्रदान करते हैं। इसमें विशेष प्रकार की मस्ती आ जाती है। राहुल जी में मस्ती थी। संसार की अड़चनें उनकी घुमक्कड़ी में बाधा नहीं डाल सकती थीं। इसका अभिप्राय यह नहीं कि उन्हें लोगों से प्रेम न था या सहानुभूति नहीं थी। व्यक्तियों से सम्बन्ध रखने पर भी वे अपने आप को मोह माया से निर्लिप्त रखते थे। उन्हें अपने सुख की चिन्ता न थी। न ही दूसरों के सुख दुःख उन्हें उनके यात्रा पथ से विचलित करते थे। यात्रा करते समय नित्य उनके नये व्यक्तियों से सम्बन्ध होते पर उन्हें स्नेह सूत्रों का बन्धन न मानकर वे आगे बढ़ते रहते थे। यात्रा से वे प्रकृति का निराला सुख अनुभव करते थे।

राहुल जी के विचारानुसार वैराग्य से अभिप्राय यह नहीं कि घुमक्कड़ का जन्मभूमि से प्रेम छूट जाता है। वास्तव में जन्मभूमि के लिए प्रेम पूर्णतया कभी

जाग्रत होता है जब व्यक्ति दूर देशों में भ्रमण करता है। तभी मातृभूमि का मनोरम चित्र उसके मानसपटल पर उभरता है। साथ ही राहुल जी का यह विचार था कि यदि जन्मभूमि का मोह हमारे पैरों को पकड़ कर हम जंगम से स्थावर बनाना चाहे तो यह जीवन का उद्देश्य नहीं है। प्रत्येक मनुष्य का अपनी मातृभूमि के प्रति एक कर्तव्य होता है जो मन में उसकी मधुर स्मृति और वाणी द्वारा कृतज्ञता प्रकट कर देने मात्र से पूरा हो जाता है। राहुल जी यद्यपि देश विदेशों की यात्रा करते रहे पर अपनी जन्मभूमि भारत को कभी नहीं भूले।

घुमक्कड़ चाहे धनी कुल में उत्पन्न हो या निर्धन घर में उसमें अन्य गुणों के अतिरिक्त स्वावलम्बन का होना आवश्यक है। राहुल जी सम्पत्ति और धन के आश्रय को घुमक्कड़ी के मार्ग में बाधक मानते थे। उनका विचार था कि सोने चाँदी के बल पर सैर करने वालों को घुमक्कड़ कहना इस महान शब्द के प्रति भारी अन्याय करना है। घुमक्कड़ को जब घर न हो तो प्रधानतः अपनी बुद्धि तथा बाहुबल तथा साहस पर भरोसा रखना चाहिये। उसे समझ लेना चाहिये कि भले ही उसका रास्ता फूलों का न हो किन्तु उसे सहारा देने वाले मनुष्य प्रत्येक स्थान पर मिलेंगे। मानवता के इन हाथों के सहारे ही राहुल जी जीवन भर यात्रा करते रहे। लोग आश्चर्य करते हैं कि बिना किसी निश्चित आय के वे इतनी लम्बी यात्रायें कैसे करते थे। राहुल जी स्वावलम्बी थे। उन्हें अपनी बुद्धि और साहस पर भरोसा था। अपने इस स्वभाव के कारण यात्राओं में उन्हें किसी प्रकार के अभाव का अनुभव न होता था। वे जहाँ पहुँचते उनका स्वागत होता और आगे की यात्रा के लिए समुचित प्रबन्ध कर दिया जाता था।

घुमक्कड़ी के लिए राहुल जी निश्चिन्तता को भी आवश्यक समझते थे। वे कहा करते थे कि घुमक्कड़ी वही कर सकता है जो निश्चिन्त है। पारिवारिक माया मोह या सांसारिक सुख को घुमक्कड़ी के सामने वे तुच्छ समझते थे। वे घुमक्कड़ी से बढ़ कर कोई सुख नहीं मानते थे। माता पिता के स्नेह सूत्र को तोड़ कर घुमक्कड़ी धारण करना वे अनुचित नहीं मानते थे। राहुल जी ने घर के स्नेह बन्धन को तोड़ कर घर की सुविधाओं को छोड़ा और घुमक्कड़ी धारण की। उनके पिता ने तथा दूसरे व्यक्तियों ने उन्हें बहुत समझाया यात्राओं की आपत्तियों के डर भी दिखाये पर राहुल जी अपने संकल्प से कभी विचलित नहीं हुये।

घुमक्कड़ी के लिए राहुल जी जहाँ माता पिता के स्नेहमय बन्धन को तोड़ डालने के पक्ष में थे वहाँ वे पत्नी के स्नेह बन्धन एवं उत्तरदायित्व को भी स्वीकार नहीं करते थे। वे कहते थे कि माता पिता अपने बच्चों को घुमक्कड़ बनने से रोकने के लिए और उपायों के साथ उनका विवाह अल्पायु में कर देते हैं। इस कार्य को राहुल जी अन्याय समझते थे। वे कहते थे कि इस अबोध जुए को तोड़ फेंकने का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है। ऐसे विवाह-बन्धन में फँस कर घुमक्कड़ यदि अपनी मिथ्या परिणीता को छोड़ता है तो वह घर और संपत्ति को त्याग

अपने साथ नहीं ले जाता। यदि लकड़ी वाले न लड़के को न देख केवल घर को ही देख कर विवाह किया है तो घर वहीं विद्यमान है वह लड़की रह वहाँ पर। राहुल जी का यह निजी अनुभव भी था उन्हें अल्पायु म ऐसे बन्धन म डाला गया था। पर उन्होंने इस विवाह-सम्बन्ध को कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सदा अपने को इस बन्धन से मुक्त समझा और निश्चिन्त होकर घुमक्कड़ी की।

राहुल जी ने घुमक्कड़ी को सबसे बड़ा धर्म बताया है। उनका कहना है कि संसार म यदि कोई सनातन धर्म है तो घुमक्कड़ी। सृष्टि की नींव ही घुमक्कड़ी पर आधारित है। आदिम पुरुष यदि एक स्थान पर नदी या तालाब के किनारे गम मुल्क म पड़े रहते तो व दुनिया को आगे नहीं ले जा सकते थे। शंकर को शंकर किसी ब्रह्म ने नहीं बनाया उन्हें बड़ा बनाने वाला था यही घुमक्कड़ी धर्म। बुद्धधर्म की जन्म देने वाले महात्मा बुद्ध एक महान घुमक्कड़ थे। जैन धर्म के प्रतिष्ठापक महावीर भी घुमक्कड़ थे। सिक्ख मत के संस्थापक गुरुनानक अपने समय के महान घुमक्कड़ थे। स्वामी दयानन्द को ऋषि दयानन्द किसने बनाया ? इसी घुमक्कड़ी धर्म ने। प्रभु ईसा भी घुमक्कड़ थे। इस प्रकार राहुल जी ने घुमक्कड़ी को सब से बड़ा धर्म सिद्ध किया है। घुमक्कड़ होना वे आदमी के लिये परम सौभाग्य की बात मानते थे। राहुल जी ने सभी धर्मों से ऊपर घुमक्कड़ी धर्म को माना था। इस धर्म को उन्होंने जीवन्त तक नहीं छोड़ा।[१]

घुमक्कड़ी को सर्वश्रेष्ठ विभूति बताने के साथ साथ राहुल जी तरुण तरुणियों को उपदेश देते हुए कहते हैं—दुनिया में मानुष जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिये। कमर बांध लो भावी घुमक्कड़ो संसार तुम्हारे स्वागत के लिये बेकरार है।[२]

राहुल जी का घुमक्कड़ी जीवन

जिस घुमक्कड़ी का राहुल जी ने उपदेश किया है वह उन जैसे साहसी एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति द्वारा ही अपनाई जा सकती है। यह केवल उन्हीं के लिये सम्भव था कि समाज की समस्याओं के प्रति पूर्णतया जागरूक रहते हुए भी वे निश्चिन्त घुमक्कड़ बन सके। राहुल जी जिस कार्य में लगते थे पूर्णतया दत्तचित होकर लगते थे। तभी घुमक्कड़ी उनके लिये अनुपम निधि बन सकी। घुमक्कड़ी से उन्हें देश विदेशों में ख्याति मिली, जीवन और जगत के अनुभव प्राप्त हुए तथा साहित्यिक कार्यों के लिए दुर्लभ सामग्री हस्तगत हुई। इसी ने उन्हें पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकार बनाया। बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण ग्रन्थों और तालपोथियों की खोज,

---

१ 'घुमक्कड़ शास्त्र' के प्रथम द्वितीय चतुर्थ सप्तम अष्टम तथा पंचदशम अध्यायों के आधार पर।

२ घुमक्कड़ शास्त्र, पृ० ११

उनकी घुमक्कड़ी का ही परिणाम है। इस घुमक्कड़ी में राहुल जी ने अपने जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत किया।[1]

घर से भागना राहुल जी ने सन् १९०७ ई० से ही आरम्भ कर दिया था। पर उनकी नियमित यात्राओं का आरम्भ सन् १९१० ई० से मानना चाहिए जबकि उन्होंने उत्तराखण्ड की यात्रा की। सन् १९१० ई० से सन् १९२१ ई० तक की अवधि में उन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों की यात्रा की। इस बीच में वे पूर्व में कलकत्ता, उत्तर पश्चिम में लाहौर और दक्षिण में बंगलौर तक घूमे, विभिन्न तीर्थों और नगरों की यात्रा की।

---

[1] राहुल जी की मुख्य यात्राओं का विवरण इस प्रकार है—१ प्रथम बार सन १६ ७ में रामनाथ—(उस समय के केदारनाथ)—घर से भागकर कलकत्ता पहुँचे। पर पैसों की कमी के कारण घर वापस आ गए।

२ सन १९१ ई० में केदारनाथ ने उत्तराखण्ड की ओर जाने का निश्चय किया। पहली बार उन्होंने मन में ठान लिया था उनके बिना घर अपने को पंगु समझते थे। इस बार वैराग्य का संबल उनके साथ था। बनारस से केदार हरिद्वार पहुँचे। वहाँ से उन्होंने केदारनाथ तथा बद्रीनाथ की यात्रा की।

सन १९१ ई० में केदारनाथ महन्त लछमनदास के पास परसा मठ में आ गए। उनको एक वैरागी साधु बना लिया गया और उनका नाम राम उदारदास रखा गया। पर संस्कृत के अध्ययन का कार्य प्रारम्भ होने से राम उदार परसा के जीवन में शीघ्र ऊब गए। साधु होकर दुनिया की गाफिल जिन्दगी फिर कहाँ—ज्ञान की चाह उनके मन में घर कर चुकी थी। परिणामतः रामउदार परसा से भाग निकले। रामउदार ने महन्त जी से बम्बई और मद्रास प्रान्तों के तीर्थों के विषय में सुन रखा था। पहले मद्रास पहुँचे। फिर तिरुमल, तिरुमशी, तिरुपती बालाजी, काञ्चीपुर, रामेश्वरम आदि दक्षिण भारत के तीर्थों की यात्रा की। तत्पश्चात् बंगलौर, बम्बई और अहमदाबाद गए। महन्त जी ने उन्हें तार भेजकर वापस बुला लिया और राम उदार परसा वापस आ गए।

४ परसा में समय नष्ट करने की अपेक्षा राहुल जी ने मर जाना अच्छा समझा। अयोध्या में तीन मास (सन १९१८ ई० जुलाई से सितम्बर तक) रहे। इसके बिना जी न रहे फिर वापस न आये।

५ रामउदार के नाना की मृत्यु उस समय हो गई थी जब रामउदार मद्रास के तीर्थों की यात्रा कर रहे थे। नाना की मृत्यु के बाद रामउदार को घर पर अब कोई आकर्षण न दिखाई देता था। प्रयाग का मेला देखने के बहाने घर से भाग निकले। वहाँ से आगरा पहुँचे और आर्य मुसाफिर विद्यालय के विद्यार्थी बने। सन १९१९ ई० में आगरा की पढ़ाई समाप्त कर सन १९१६ ई० में संस्कृत की उच्च शिक्षा के लिए लाहौर पहुँचे।

६ भाई साहब महेशप्रसाद आर्य मुसाफिर आगरा में रामउदार के गुरु रह चुके थे। अब वे भी मौलवी आलिम जमात में लाहौर में पढ़ रहे थे। उन्होंने परामर्श दिया कि वहाँ से मिशनरी तैयार करने के लिए और उसके लिए चन्दा इकट्ठा

सन १९२३ ई० से उनकी विशेष-यात्रा का आरम्भ होता है। वे प्रथम बार सन् १९२३ ई० में नेपाल गये, सन १९२७ ई० में प्रथम बार लंका यात्रा की। बाद में लंका से उन्हें इतना प्रेम हो गया कि वहाँ की तीन बार और यात्रा की तथा वहाँ पर्याप्त समय तक ठहरे। लंका में वे बौद्ध धर्म से प्रभावित हुए और बौद्ध भिक्षु

करने के लिए बृद्ध स्थानों की यात्रा करनी चाहिए। इस सम्बन्ध में रामउदार ने सन १९१७-१८ ई० में यशवन्तनगर, इटावा, कानपुर, लखनऊ, हरदोई, प्रतापगढ़, अहरौरा, मनपुरा, झाँसी आदि स्थानों की यात्रा की। पर इन स्थानों की शिथिलता के कारण भिखमंगी तयार करने का प्रयास बन्द करना पड़ा।

७ सन १९१९-२० में उन्होंने तिरहुत और उसके आसपास के पहाड़ों की यात्रा की।

८ महात्मा बुद्ध के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होने के कारण उन्होंने बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित स्थानों की यात्रा करने का निश्चय किया। अतः सन् १९४० ई० में लुम्बिनी (बुद्ध का जन्मस्थान), कपिलवस्तु, मायाकुँअर (निर्वाण स्थान), सारनाथ, नालन्दा, बोधगया की यात्रा की।

९ उनका ध्यान धर्म की ओर से अभी हटा नहीं था। वे वेदान्त और मीमांसा पढ़ना चाहते थे। इसी उद्देश्य को लेकर स्वामी हरिप्रपन्नाचार्य के पास तिरुमिशी (दक्षिण) पहुँचे। वहीं रहते हुए अपना यात्रा-क्रम जारी रखा। सन १९२१ ई० में रामउदार ने बंगलौर, मैसूर और कुर्ग प्रान्त की यात्रा की।

१० गांधी के करने हुए प्रभाव के कारण रामउदार का ध्यान राजनीति की ओर गया पर कुर्ग को वे एकदम छोड़ भी न सकते थे। पिता जी की मृत्यु का समाचार पाकर वे कुर्ग से छुट्टी लेकर चले और सीधे छपरा पहुँचे और कांग्रेस में प्रविष्ट हो गये। सन १९२१ ई० से ७ ई० तक वे साल में वे राजनीति में सक्रिय भाग लेते रहे। सत्याग्रह किये और जेल में भी गये। अतः इस काल में वे नियमित रूप से यात्रा न कर सके। फिर भी सन १९ ई० (मार्च अप्रैल) में डेढ़ मास के लिए वे नेपाल गये और सन १९ ई० में पंजाब और सीमा प्रान्त का भ्रमण करते हुये काश्मीर पहुँचे। श्रीनगर, लद्दाख, पश्चिमी तिब्बत और बुशहर रियासत की यात्रा की।

११ कांग्रेस के सामने उस समय कोई विशेष कार्यक्रम न था। बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित होने के कारण उन्होंने लंका जाने का निश्चय किया। मद्रास होते हुये १५ मई सन १९२७ ई० को कोलम्बो (लंका) पहुँचे। लंका के विद्यालंकार विहार में पठन-पाठन का काम करने लगे। लंका में १९ मास (१३ मई १९२७ से १ दिसम्बर १९२८ ई० तक) रहे। वहाँ बौद्ध धर्म और पाली भाषा के सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया।

१२ १ दिसम्बर सन १९२८ ई० को रामउदार लंका से भारत के लिए रवाना हुए। सांची, कौशाम्बी, कसया (कुशीनगर) आदि बौद्ध स्थानों की यात्रा करते हुए छपरा पहुँचे।

१३ बौद्ध धर्म के ग्रन्थों की प्राप्ति के लिए रामउदार ने तिब्बत जाने का निश्चय किया। गुप्त रूप से नेपाल पार करते हुए १९ जुलाई सन १९२९ ई० को वे

बन गए। बौद्ध धर्म के ग्रन्थों की खोज और तत्सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए वे तिब्बत गए। मार्ग की कठिनाइयों से व कभी हतोत्साह नहीं हुए। राहुल जी ने तिब्बत की चार बार यात्रा की। तिब्बत यात्राओं को व बड़ी गौरवपूर्ण और लाभप्रद मानते थे।

तिब्बत की राजधानी ल्हासा पहुँचे। वहाँ उन्होंने तिब्बती भाषा और बौद्ध धर्म के ग्रन्थों का खूब अध्ययन किया। वहाँ से साथ हुए तीन हजार रुपयों में से प्रायः दो हजार की तालपोथियाँ तथा चित्रपट खरीदे। इन सभी चीजों को बीच्चर १७ १८ खच्चरों पर कलिमपोंग के लिए रवाना किया और २४ अप्रैल १९३० ई० को रामउदार लंका से भारत के लिए रवाना हुए। मद्रास होते हुए २ जून १९ ई० को वे फिर लंका पहुँचे।

१४ लंका पहुँचने पर २२ जून सन १९ ई० को रामउदार की प्रव्रज्या (संन्यास) हुई और वह बौद्ध भिक्षु संघ में नियमानुसार सम्मिलित कर लिया गया। अब तक वे रामउदार स्वामी के नाम से प्रसिद्ध थे किन्तु अब आवश्यकता हुई नये नाम की। उन्होंने स्वयं ही रामउदार के प्रथमाक्षर रा का साम्य देखते हुए अपने लिए 'राहुल' नाम का प्रस्ताव किया और वह स्वीकृत भी हो गया। गोत्र साथ जोड़ जाने के कारण अब वे राहुल सांकृत्यायन के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। भारत में चल रहे सत्याग्रह ने उन्हें आकर्षित किया और राजनीति में भाग लेने के विचार से १८ दिसम्बर सन १९ ० ई० को उन्होंने भारत में पुनः पदार्पण किया।

१५ कांग्रेस का अधिवेशन ९ से १ मार्च (१९ ९ ई०) तक कराची में होने को था। उसमें भाग लेने के लिए राहुल सांकृत्यायन कराची पहुँचे। वापसी में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा होते हुए वे लाहौर पहुँचे। वहाँ से छपरा आ गये।

१६ १८ नवम्बर सन १९ १ ई० को राहुल जी तीसरी बार लंका पहुँचे।

१७ ५ जुलाई सन १९ २ ई० को भदन्त आनन्द कौसल्यायन के साथ योरुप यात्रा पर चले। योरुप को वे धर्म प्रचार के लिए जा रहे थे। पेरिस होते हुए २७ जुलाई सन १९ ई० को राहुल जी लन्दन पहुँचे। २७ जुलाई से १३ नवम्बर तक साढ़े तीन महीने वे 'लन्दन' में रहे और वहाँ साम्यवादी साहित्य का अध्ययन किया।

१८ भदन्त आनन्द जी को लन्दन में छोड़ राहुल जी १४ नवम्बर १९३२ ई० को फिर पेरिस पहुँचे। जर्मनी भी गये। १६ जनवरी १९३३ ई० को कोलम्बो पहुँचे। ० जनवरी सन १९३५ ई० को उन्होंने भारत के लिए प्रस्थान किया।

१९ सन १९ ई० में द्वितीय बार ल्हासा यात्रा की।

२० द्वितीय तिब्बत-यात्रा में १९ मई १९ ४ ई० को ल्हासा पहुँचे। इस यात्रा का उद्देश्य था—प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों की खोज। ८ सितम्बर (१९ ४ ई०) तक ल्हासा में रहे। मानसरोवर होते हुए नेपाल के रास्ते ५ सितम्बर १९३४ ई० को भारत पहुँचे।

२१ २ अप्रैल सन १९ ५ ई० को दो बजे गंगा सागर जहाज से कलकत्ता से चले और ५ अप्रैल को दस बजे रंगून पहुँचे। राहुल जी उस समय बौद्ध भिक्षु

पश्चिमी सभ्यता से परिचित होने के लिए राहुल जी भदन्त आनन्द कौसल्यायन के साथ सन १९३२ ई० में यारप गये। इस यात्रा में फ्रांस जर्मन और इंगलैण्ड गये। वहाँ का जीवन उन्हें आकर्षित न कर सका। उन्हें वहाँ के जीवन में कृत्रिमता प्रतीत हुई। यही कारण था कि उन्होंने योरप की दूसरी बार यात्रा नहीं की।

थ और बौद्ध धर्म के अनुयायी देश जापान का परिचय प्राप्त करने के लिए वहाँ गये थे।

२२ जापान से कोरिया मंचूरिया होते हुए ४ सितम्बर सन १९३५ ई० को वे रूस देश की राजधानी मास्को पहुँचे। उस समय उन्होंने कोट पतलून आदि देशकालोचित वस्त्र धारण कर लिये थे। रूस में उन्होंने खान पान के प्रसंग में किसी प्रकार का यहाँ तक कि सूअर के मांस का भी भोजन करने में संकोच न किया।

२३ रूस से ईरान होते हुए १७ अक्तूबर (१९३५ ई०) को लाहौर पहुँचे।

२४ सन १९३६ ई० में तीसरी बार तिब्बत गये। वे प्राचीन ग्रंथों की खोज के लिए वहाँ गये थे। तिब्बत से वे अनेक ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तथा फोटोग्राफ लाये।

२५ द्वितीय रूस यात्रा पर राहुल जी १७ नवम्बर सन १९३७ को मास्को पहुँचे। इस बार वे रूस में १७ नवम्बर १९३७ से १९ जनवरी सन १९३८ ई० तक रहे। २८ नवम्बर १९३७ ई० को लेनिनग्राद की प्रसिद्ध ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट देखने गये। वहाँ उनकी संस्कृत के विद्वान आचार्य श्चेर्वात्स्की से भेंट हुई। उसी समय उनकी भेंट सेक्रेटरी मिस लोला से हुई। दोनों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण बढ़ा और दोनों का विवाह सम्बन्ध हो गया।

२६ भिक्षु वेष धारण कर राहुल जी चौथी बार तिब्बत यात्रा को गये। तिब्बत यात्रा समाप्त कर ६ अक्तूबर सन १९३८ ई० को वे कलकत्ता पहुँचे।

२७ ६ अक्तूबर सन १९३८ ई० में उन्होंने फिर भारत की राजनीति में सक्रिय भाग लेना आरम्भ किया। अतः कुछ समय तक वे यात्रा कार्य न कर सके।

२८ चौंतीस वर्ष बाद अप्रैल १९४२ ई० में वे अपने ग्राम कनैला गये क्योंकि अब पचास वर्ष तक की आयु तक आजमगढ़ जिले में प्रवेश न करने की शपथ पूरी हो चुकी थी।

२९ मई-जून सन १९४३ ई० में उत्तराखण्ड की यात्रा की।

३० किसान सम्मेलन में भाग लेने के लिये मार्च सन १९४४ में वे बजवाड़ा (आन्ध्र प्रदेश) गये। (राहुल जी कृत मेरी जीवन यात्रा भाग १ २ तथा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के आधार पर)

३१ नवम्बर १९४४ ई० में राहुल जी तीसरी बार रूस पहुँचे। वहाँ २५ मास रहे।

३२ १९५३, १९५६ और १९५८ में वे नेपाल यात्रा पर गये।

३३ १९५८ में चीन-यात्रा की। वहाँ वे चार मास रहे।

३४ १९५९ ६१ में (ढ़ेढ़ वर्ष) तक लंका में रहे।

३५ १९६२ ६३ (सात महीने तक) राहुल जी चिकित्सा के लिए रूस में रहे। (श्रीमती कमला सांकृत्यायन के पत्र दिनांक १७ अगस्त १९६५ के आधार पर। पत्र के लिये कृपया देखिये परिशिष्ट)

बौद्ध सोसाइटी ने धर्म प्रचार के लिए उन्हें अमेरिका भेजना चाहा पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। अमेरिका का जीवन उन्हें योरुप के जीवन से भिन्न प्रतीत नहीं हुआ। लंका और तिब्बत के अतिरिक्त उन्हें सोवियत भूमि से विशेष प्रेम था। सन् १९[illegible] में प्रथम बार वे रूस गये। इसके बाद तीन बार और रूस यात्रा की।

राहुल सांकृत्यायन पूरे घुमक्कड़ थे। वे अपने पैरों में चक्कर बनाया करते थे। चाल भी तेज थी। उन्हें आराम से बैठना पसन्द ही न था। वे सदा ही किसी न किसी यात्रा के लिए तैयार रहते थे। साधारण मध्यमान (औसत) निकालने से ज्ञात होता है कि उन्होंने सन् १९२० के बाद प्रत्येक वर्ष एक न एक विदेश यात्रा अवश्य की। उनका नियम था कि वे जिस मार्ग से एक बार यात्रा कर लेते थे उस ओर से दूसरी बार नहीं जाते थे। इस प्रकार वे अधिक से अधिक प्रदेशों की यात्रा कर लेते थे। विदेश यात्राओं में उनके लिए मुख्य आकर्षण के देश—लंका, तिब्बत और रूस। भारत में उन्हें बौद्ध तीर्थ विशेष आकर्षित करते रहे। उन्होंने लगभग समस्त भारत की यात्रा की थी कई प्रदेशों की तो अनेक बार। इनकी यात्रा ग्रीष्मकाल में सुखदायक होती थी। अतः तिब्बत यात्रा वे गर्मियों में किया करते थे।

राहुल जी की यात्रायें सोद्देश्य हुआ करती थीं। लंका यात्रा का उनका मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना और पालि पठन होता था। लंका में वे बौद्ध भिक्षु बने अनीश्वरवादी बने। लंका में उन्हें तिब्बत यात्रा की प्रेरणा मिली। तिब्बत से वे बौद्ध धर्म सम्बन्धी ग्रंथ और सामग्री लाये। उनके ये सामग्री बिहार रिसर्च सोसाइटी को भेंट की गई। राहुल जी की ओर से यह एक अनुपम देन थी।

इन विदेश की यात्राओं ने राहुल जी के व्यक्तित्व को कई प्रकार से प्रभावित किया। उन्हें असीम अनुभव प्राप्त हुए। स्पष्टवादिता, उदारता, विचारों की विशालता, प्राणि मात्र के प्रति सहानुभूति आदि उनके व्यक्तित्व के मुख्य तत्व इन यात्राओं के परिणामस्वरूप विकसित हुए थे। विदेश यात्राओं ने उनके खानपान और रहन सहन को भी प्रभावित किया। भारत में तो बाल्यावस्था के पश्चात वे वैष्णव भोजन करते थे पर लंका में उन्होंने मछली खाना आरम्भ कर दिया। तिब्बत में उन्होंने याक का और रूस में सूअर का मांस खाया। योरुप के खान पान से भी कोई परहेज न किया। विदेश यात्रा में वे आवश्यकतानुसार देश कालोचित वेशभूषा रखते थे। तिब्बत यात्राओं में भिक्षु वेष रखते थे पर रूस यात्रा में उन्होंने कोट पैन्ट धारण कर लिए थे।

विदेश यात्राओं ने [illegible] बल्कि उनके राजनीति सम्बन्धी विचारों को प्रभावित किया था। विचारधारायें उन्हें प्रभावित न कर सकीं। यहां का साम्राज्यवादी वातावरण उनकी स्वच्छन्द प्रकृति के प्रतिकूल था। वहां का जीवन उन्हें कृत्रिम प्रतीत हुआ और कृत्रिमता से उन्हें स्वाभाविक चिढ़ था। इसके विपरीत रूस का

जीवन उन्हें विशेष रोचक लगा। वहाँ के जीवन को उन्होंने बड़ी निकटता से देखा। वहाँ के जीवन में उन्हें कृत्रिमता का अभाव प्रतीत हुआ। जिन विचारों की कल्पना उन्होंने अपनी पुस्तक 'बाईसवीं सदी' में की है वहाँ के जीवन में उन्हें प्रत्यक्ष दिखाई दी। यही कारण था कि वहाँ के जीवन ने राहुल जी को विशेष आकर्षित किया। वहाँ के जीवन का अपने विचारों के साथ साम्य पाकर उन्होंने रूस के मार्क्सवाद का अध्ययन किया। मार्क्सवाद ने उनके जीवन को एक नवीन मार्ग दिया। भारत में उन्होंने किसानों और मजदूरों का पक्ष लेना आरम्भ किया। वे किसानों और मजदूरों के साथी बन गये और उनके लिए आन्दोलनों में भाग लेने लगे। विदेश-यात्राओं ने विशेषकर रूस की यात्रा ने उनको रूढ़िवादिता से मुक्त कर दिया। उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक बन गया। वे ईश्वरवादी से अनीश्वरवादी तथा भौतिकवादी बन गये। विश्व भ्रमण ने ही उनके व्यक्तित्व को प्रगति की ओर उन्मुख किया।

यात्राओं ने व्यक्तित्व के साथ उनकी लेखन कला को भी अनुप्राणित किया। बौद्ध भिक्षु बन जाने पर उन्होंने महात्मा बुद्ध के उपदेशों को लोगों तक पहुँचाना चाहा। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उन्होंने रचना कार्य को साधन बनाया। लंका के जीवन के सम्बन्ध में उन्होंने दैनिक पत्रों और मासिक पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे। उनके ये लेख मासिक पत्रिका 'सरस्वती' और दैनिक पत्र 'विश्वमित्र' में प्रकाशित हुए। यहीं लंका से उनके साहित्यिक जीवन का आरम्भ होता है। इस प्रकार विदेश यात्राओं ने उनकी लेखनी को नवीन चेतना दी। उन्होंने लंका के बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म सम्बन्धी रचनायें कीं। महात्मा बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित 'बौद्धचर्या' नामक पुस्तक की रचना की। अनेक बौद्ध ग्रन्थों का सम्पादन किया और अनुवाद भी किया।

उन्होंने जिस देश की यात्रा की वहाँ से सम्बन्धित जीवन पर पुस्तक भी अवश्य लिखी। 'लंका', 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'जापान', 'ईरान', 'रूस में पच्चीस मास'—उनकी मुख्य यात्रा रचनायें हैं। जिस देश की वे यात्रा करते थे वहाँ के जीवन को वे बड़ी सूक्ष्मता से देखा करते थे। वहाँ प्राप्त अनुभव उन्हें रचना कार्य के लिए बाध्य कर देते थे। विदेशों के जीवन के साथ साथ वहाँ की राजनीति ने भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। रूस के मार्क्सवाद ने उन्हें अपने रंग में रंग दिया। इस सम्बन्ध में राहुल जी ने लिखा है—'सोवियत मेरे लिए साम्यवाद का साकार रूप था। सोवियत की बुराई करके जो अपने को साम्यवादी या साम्राज्यवादी कहे उसे मैं वंचक या बेवकूफ छोड़कर और कुछ नहीं समझ सकता।'[1] 'सोवियत न्याय', 'सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी का इतिहास', 'कम्यूनिस्ट क्या चाहते हैं?', 'साम्यवाद ही क्यों?'—आदि ग्रन्थों के लिए सामग्री राहुल जी को रूस के राजनीतिक जीवन से प्राप्त हुई। मार्क्सवादी

[1] मेरी जीवन यात्रा भाग २ पृ० ४०८

नेताओं की जीवनियाँ भी उन्होंने लिखी — स्तालिन, लेनिन, कार्ल मार्क्स आदि।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि देश विदेश की यात्राओं ने उनकी धर्म विषयक धारणाओं, राजनीतिक विचारों तथा साहित्यिक मान्यताओं को प्रभावित किया। राहुल जी यदि विदेश यात्रायें न करते तो इतने बड़े परिमाण में रचना कार्य न कर पाते। घुमक्कड़ी राहुल जी के लिए वरदान सिद्ध हुई।

राहुल सांकृत्यायन और धर्म

धर्म क्या है ?—इस प्रश्न पर बहुधा वाद-विवाद तथा शास्त्रार्थ होते रहे हैं। परिणामस्वरूप अनेक मत मतान्तर यहाँ जन्म लेते रहे हैं। इस युग में सर्वत्र धर्म संबंधी परिभाषायें समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रही हैं। आजकल धर्म की परिभाषा के विषय में जितने मुँह उतनी बात वाली लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है। धर्म सम्बन्धी परिभाषाओं को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—(१) रूढ़िवादी तथा (२) वैज्ञानिक। रूढ़िवादी परिभाषायें ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करती हैं और ईश्वर प्राप्ति के साधनों का निर्देश करती हैं। वैज्ञानिक परिभाषायें भौतिक पदार्थों के अस्तित्व तक चिंतन क्षेत्र को सीमित करती हैं ईश्वर की सत्ता को तर्क की कसौटी पर कसा जाता है।

आजकल प्रत्येक वस्तु को वैज्ञानिक कसौटी पर परखा जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार धर्म को किसी जाति वर्ग वर्ण पद इत्यादि के लिए उचित ठहराया हुआ व्यवसाय या व्यवहार कर्त्तव्य[1] माना जाता है। हिन्दी साहित्यकारों में धर्म सम्बंधी वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वालों में राहुल सांकृत्यायन एक हैं। वे मानवता के अंतर्गत कर्त्तव्य पालन को मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। शेष चीजों को वे निरा पाखण्ड समझते हैं। पर तु इस निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व वे कट्टर ईश्वरवादी रहे और उन्होंने अनेक धर्म आजमाये। राहुल जी ने धर्म के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किये। उनकी धर्म सम्बन्धी धारणाओं के विकास से परिचित होना आवश्यक है।

राहुल जी की बाल्यावस्था का अधिकांश उनकी ननिहाल में बीता था। राहुल जी के नाना रामशरण पाठक की युवावस्था और प्रौढ़ावस्था एक सैनिक के रूप में व्यतीत हुई थी। इस कारण पाठक जी धर्म कर्म की ओर विशेष रुचि न रख सके। अवकाश प्राप्त करने पर वे वैष्णव धर्म[2] के पक्के अनुयायी

---

[1] संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर पृ० ५० नागरी प्रचारिणी सभा

[2] वैष्णव धर्म— वैष्णव धर्म या वैष्णव सम्प्रदाय का प्राचीन नाम भागवत धर्म या पाँच रात्र मत है। इस सम्प्रदाय के प्रधान उपास्य देव वासुदेव हैं जिन्हें ज्ञान शक्ति बल वीर्य ऐश्वर्य और तेज इन छः गुणों से सम्पन्न होने के कारण भगवान या भगवत कहा गया है और भगवत के उपासक भागवत कहलाते हैं। दसवीं से तेरहवीं चौदहवीं शती तक इस प्रकार भक्ति का आंदोलन

बन गये। राहुल जी अपने पिता के सम्पर्क में दस वर्ष की आयु में आये थे। उनके पिता धार्मिक वृत्ति के मनुष्य थे। पूजा के बड़े नियमों का पालन करने के कारण गाँव वाले उन्हें 'पुजारी' कहते थे। वे हनुमान बाहुक और रामायण का पाठ करते थे और शंकर की पूजा किया करते थे। पक्के आस्तिक होते हुए भी बाबा वाक्यं प्रमाणम्' की अवहेलना करने में वे समर्थ थे। ब्राह्मणों की कट्टर पंथी सामाजिक परम्परा के प्रतिकूल वे अपने निस्सन्तान हरवाहे 'चिंगी' चमार के मरने पर उसे गंगा-तीर जलाने के लिए ले गये। पुरानी प्रथाओं के प्रति वे अंध विश्वासी नहीं थे।

राहुल जी के नाना और पिता धर्म कर्म में अधिक कट्टर तथा रूढ़िवादी नहीं थे। कहा जा चुका है कि उनके नाना वैष्णव होते हुये भी अपने नाती 'केदार' के लिए मछली माँस पकाने में संकोच नहीं करते थे। विचारों की यह स्वतन्त्रता आगे चल कर राहुल के जीवन में भी प्रस्फुटित हुई। वास्तव में राहुल जी के धर्म सम्बन्धी विचारों में स्वतन्त्रता का बीजारोपण उनके पिता और नाना के क्रमागत स्वतन्त्र विचारों द्वारा ही हुआ।

राहुल जी के प्रारम्भिक धर्म सम्बन्धी विचारों पर अगला प्रभाव बाबा परमहंस का पड़ा। बाबा परमहंस कनैला के सीमान्तीय गाँव उमरपुर में मगई नदी के पार कुटिया बनाकर रहते थे। दूर दूर तक के लोगों का उनके प्रति आकर्षण था। राहुल के पिता जी बाबा परमहंस के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे। हर चौथे पाँचवें दिन वे दर्शनार्थ वहाँ पहुँचते थे। राहुल जी भी अपने पिता के साथ बाबा परमहंस के पास जाने लगे। उसी कुटिया में एक बाबा हरिचरणदास भी रहते थे। उन्होंने राहुल जी को वेदान्त[1] का उपदेश दिया। वेदान्त की ओर उनकी रुचि बढ़ती गई। सन १९१० ई० में राहुल जी जब १६ वर्ष के थे, पक्के वेदान्ती बन गये थे। उन दिनों वेदान्त

दक्षिण में शास्त्रीय रूप धारण करके तथा आध्यात्मिक पक्ष से दृढ़ हो कर पुनः उत्तर की ओर आया और चौदहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक प्रबल वेग के साथ देश के विस्तृत भूभाग में महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, मध्य प्रदेश, मगध, उत्कल, आसाम और बंग देश में फैलकर व्यापक लोकधर्म बन गया। उत्तर भारत में इसका नवीन रूप में प्रचार करने वाले सबसे प्रथम और सबसे अधिक शक्तिशाली स्वामी रामानन्द हुये। जिन्होंने आध्यात्मिक दृष्टि से रामानुज के विशिष्टाद्वैतवाद को ही मानते हुए भक्ति का पृथक सम्प्रदाय स्थापित किया जिसमें दाक्षिणात्य श्री वैष्णवों की तरह कठोर नियम नहीं था। लक्ष्मी नारायण के स्थान पर उन्होंने सीताराम को अपना उपास्यदेव बनाया।—हिन्दी साहित्य कोष, पृ० ५३६-५३९ स० धीरेन्द्र वर्मा।

१ वेदान्त का शाब्दिक अर्थ है वेद का अन्त अर्थात् अन्तिम भाग। वेदों के अन्तिम भाग उपनिषद् नामक ग्रंथ है अतः उनको वेदान्त कहा जाता है। वेदान्त का मुख्य सिद्धान्त 'ब्रह्मवाद' है। ब्रह्म और जगत का सम्बन्ध, ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध, मुक्ति का मार्ग आदि विषय वेदान्तियों की चर्चा के मुख्य विषय रहे हैं। हिन्दी साहित्य कोश पृ० ७३८, स० डा० धीरेन्द्र वर्मा।

और वराग्य के अतिरिक्त ~ ~ दूसरा धार्मे ध्येय और असहा सगनी था। य ार्ती होने के कारण देवताओं की भाँति उनके लिए आकर्षण न रखती थी। उस समय उनका विचार सम्पूत और उस न घटकर म यासी हो जा का था।

राहुल जी के दिन गे म फिर परिजन आया। व यन ा ा शिवभत[1] बन। बत्तीस मनियाँ रा उन ा ा म का उ ा गल म पड़ा रहता और सिर का भस्म त्रिपुण्ड रात यो सा जा पर ही मिटता। रुद्राष्टाध्यायी के बहुत से अध्याय तथा महिम्न स्तोत्र के पारायण करत करत उन्हें याद हो गये। सन १९११ ई० तक राहुल जी पक्के शिवभक्त र।

सन १९११ ई० म ही राहुल जी न एक नया अनुभव प्राप्त किया। 'त ्र मन्त्र' के प्रति उनकी रुचि हो गई। तन्त्र मन्त्र जानने के लिए व नगवा स्वामी पूर्णानन्द के पास जाने लग। राहुल जी के आग्रह पर स्वामी जी न बतलाया कि पूरे नियम के साथ मन्त्र का लौ लाख जप करने पर दुर्गा सिंह वाहिनी का साक्षात दर्शन होगा वह वर दहि कन्या फिर धन बल बुद्धि विद्या जो माँगना हो माँग लना। राहुल जी न आठ दिन तक दुर्गा का जप किया। पर जगदम्बा के दर्शन न हुए। अपनी इस असफलता पर राहुल जी को बड़ा दुःख हुआ और अधिक जीना व्यर्थ समझ कर उन्होंने धतूरे के बीज खा लिए। मरत मरत बच दूसर दिन होश आया।

सन १९१२ ई० म राहुल जी परसामठ के महन्त लछमनदास के सम्पर्क म आय। महन्त जी न राहुल जी को वष्णव बना लिया। परसा के मठ उत्तराधिकारी के स्थान पर केदार नाम बदल कर उनका वष्णव नाम रामउदार रखा गया। इस मठ म राहुल जी वरागी तपस्वी साधु का नहीं अपितु एक सुकुमार राजकुमार का जीवन बिताने लग। राहुल जी को वष्णव अवश्य बना लिया गया था पर इस ओर उनकी रुचि अब भी न थी। इस प्रसंग में व स्वयं लिखते हैं—
पूजा-पाठ की तरफ मेरा मन न लगता था। सवेर स्नान करके कोठरी म जाता। लोग समझत 'पुजारी जी पूजा पाठ म लगे हैं' और यहाँ पुजारी जी दरवाजा बन्द कर बिस्तरे पर खूब पर फैला लेट रहे हैं अथवा कोई उपन्यास या सरस्वती का अंक पढ़ रहे हैं। अभी तक मैं आर्य समाज के मूर्ति विरोधी प्रभाव म नहीं आया था तो भी मेरे लिए शालिग्राम के वह काले काले गोलमटोल चिकने पत्थर निरे पत्थर थे। बेगार की तरह उन पर चन्दन और तुलसीदल भी डाल देता। जल्दी पट्टा हटा देने पर डर था सन्देह होने का इसलिए भीतर ही बन्द एक शालिग्राम को दूसरे स लगाया करता।[2]

---

[1] शिवभक्त—शिव को परमेश्वर मानने वाला जो शव या शिवभक्त कहा जाता है और उनके धर्म को शवमत। शिव का अर्थ है शुभ या कल्याण। हिन्दी साहित्य कोश प ७७ सम्पा० डा धीरेन्द्र वर्मा।

[2] मेरी जीवन-यात्रा भाग १ पृ० १६ १६३